अमृत वाणी

लोभी सारा संसार प्राप्त कर लेने पर भी भूखा रहता है।

- शेख सादी

स्वास्थ्य विभाग में विशेषज्ञ चिकित्सकों के नियुक्ति की पहल

प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देश पर राज्य में चिकित्सा अधिकारी एवं विशेषज्ञ चिकित्सकों के नियुक्ति की प्रक्रिया का शुरु किया जाना अवश्य ही स्वागतेय है। जैसा कि बताया गया है कि अब तक 246 एम बी बी एस प्रत्याशियों को चिकित्सा अधिकारी और 21 चिकित्सकों को विशेषज्ञ चिकित्सक के रुप में पदस्थ किया जा चुका है और भी अच्छी बात यह है कि इनमें से पचास फीसदी चिकित्सक बस्तर और सरगुजा संभाग के अंदरुनी क्षेत्रों में पदस्थ किए गए हैं।

यहां यह उल्लेख करना गलत नही होगा कि राज्य शासन ने जन जन तक चिकित्सा सेवा का लाभ पहुंचाने गांव से लेकर शहर तक अलग अलग स्तर पर स्वास्थ्य केन्द्र खोले लेकिन उनमें से अधिकतर में किसी न किसी कमी वश चिकित्सा सेवा में बाधा उत्पन्न हो रही है। कहना न होगा कि यह कमी मुख्यत: चिकित्सा अधिकारी और विशेषज्ञ चिकित्सकों की ही है।

बस्तर संभाग के एकमात्र मेडीकल कॉलेज को ही देखें। मेडीकल कॉलेज खुलने से पहले संभाग मुख्यालय के अस्पताल को एक तरह से रेफरिंग सेंटर का नाम दिया गया था क्योंकि विशेषज्ञ चिकित्सक से लेकर अन्य स्टाफ की कमी के चलते कोई भी गंभीर मरीज को लाए जाते ही उसे बाहर ले जाने का परामर्श दे दिया जाता था।

मेडीकल कॉलेज खुलने के बाद लोगों में यह आस बंधी कि अब उन्हें इलाज करवाने अपने शहर के बाहर नही जाना होगा लेकिन बदकिस्मती से लोगों की यह आस अब तक पूरी नही हो पाई जिसकी एक मात्र वजह चिकित्सा विशेषज्ञों का न होना एवं स्टाफ की कमी ही है। इसलिए भी लोगों को रायपुर विशाखापटनम की दौड़ लगाने से राहत नही मिल पाई। जहां संभाग मुख्यालय की यह स्थिति है तो अंदरुनी इलाके में स्थित अस्पतालों और स्वास्थ्य केन्द्रों को किन हालातों में कार्य करना पड़ रहा है उसका अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है।

जो भी हो यह बहुत अच्छी बात है कि मुख्यमंत्री साय ने राज्य में स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने के कार्य को प्राथमिकता के तौर पर लिया है और उसी के चलते चिकित्सकों एवं विशेषज्ञ चिकित्सकों की पदस्थी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है।

केवल यही नही मुख्यमंत्री के निर्देशन में छत्तीसगढ़ में हेल्थ सर्विस डिलीवरी में ड्रोन का उपयोग शुरु किया जाना भी एक महत्वपूर्ण कदम है। छत्तीसगढ़ में अब ड्रोन के व्दारा दवाओं एवं ब्लड सैंपल परिवहन का अभिनव प्रयोग किया जा रहा है।

उल्लेखनीय बिन्दु यह है कि स्वास्थ्य सुविधाओं की समुचित उपलब्धता लोगों की सर्वोच्च बुनियादी जरुरत है जिसे प्रदेश के हर कोने तक अनवरत पूरा किया जाना हर जनकल्याणकारी सरकार का अहम कर्तव्य है। अत: छत्तीसगढ़ सरकार की इस दिशा में तत्परता एवं योगदान की अवश्य सराहना की जानी चाहिए।

सहमति से हो इंडिया गठबंधन में सीटों का बंटवारा

केंद्र में सत्तारूढ़ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार को सत्ता से हटाने के लिए देश के 28 प्रमुख विपक्षी दलों के नेताओं ने एक साथ मिलकर इंडिया गठबंधन बनाया है। इंडिया गठबंधन बनने से देश के लोगों को राजनीति में एक नया विकल्प तो मिला ही है, उसके साथ ही उन्हें लगने लगा कि आने वाले लोकसभा चुनाव में इस गठबंधन में शामिल सभी राजनीतिक दल एकजुट होकर चुनाव लड़ेंगे तो भाजपा नीत एनडीए गठबंधन को कड़ी टक्कर देंगे।

इंडिया गठबंधन में कांग्रेस सहित कई राष्ट्रीय व क्षेत्रीय पार्टियां शामिल है। इनमें से बहुत सी क्षेत्रीय पार्टियों की उनके प्रदेशों में सरकार भी चल रही है। इंडिया गठबंधन की कई बैठके भी हो चुकी है। मगर गठबंधन में सीटों का बंटवारा नहीं होने से आपसी मनमुटाव की स्थिति बनी हुयी है।

इंडिया गठबंधन में कांग्रेस सबसे बड़ी राष्ट्रीय पार्टी है। ऐसे में कांग्रेस का दायित्व बनता है कि वह गठबंधन में शामिल सभी दलों को साथ लेकर आगामी लोकसभा चुनाव के लिए सीटों का बंटवारे जल्दी से करें। मगर अभी तक ऐसा हो नहीं पाया है। चूंकि देश में 10 साल बाद भाजपा के खिलाफ विपक्षी दलों का एक गठबंधन बना है। इसको सुचारू रूप से बनाए रखने के लिए इसका संयोजक भी बनाया जाना चाहिए था। मगर कई महीने निकल जाने के बाद भी अभी तक विधिवत रूप से इंडिया गठबंधन का संयोजक का नाम घोषित नहीं हो पाया है। सीटों का बंटवारा नहीं होने के कारण गठबंधन में शामिल कई राजनीतिक दल नाराजगी जाहिर करने लगे है।

इंडिया गठबंधन को लेकर कांग्रेस द्वारा बरती जा रही ढलाई के चलते ही बिहार में जनता दल यू गठबंधन से बाहर होकर फिर से एनडीए में शामिल हो गया है। जदयू अध्यक्ष नीतीश कुमार ने भाजपा के साथ मिलकर बिहार में सरकार भी बना ली है। नीतीश कुमार इंडिया गठबंधन को बनाने वाले मुख्य राजनेताओं में शामिल थे। वह इंडिया गठबंधन के संयोजक बनना चाहते थे। मगर गठबंधन में शामिल कई दलों के नेताओं में आपसी खींचातान के चलते नीतीश कुमार संयोजक नहीं बन सके। इसी से खफा होकर उन्होंने इंडिया गठबंधन को छोड़ दिया। जीतन राम मांझी की हम पार्टी बिहार में पहले ही इंडिया गठबंधन से बाहर निकल चुकी थी।

इसी तरह उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय लोकदल के अध्यक्ष जयंत चौधरी ने भी भाजपा से गठबंधन कर इंडिया गठबंधन को अलविदा कह दिया है। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की अध्यक्ष व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पहले ही इंडिया गठबंधन में शामिल वामपंथी दलों से किसी भी तरह का चुनावी गठबंधन करने से इनकार कर दिया है। ममता बनर्जी ने बंगाल में कांग्रेस के लिए उनकी मौजूदा दो लोकसभा सीटों को ही छोड़ने की बात कही है। जबकि कांग्रेस वहां अधिक सीटों पर दावा कर रही थी। इससे वहां सीटों का तालमेल नहीं हो पा रहा है। ममता बनर्जी ने अकेले ही चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी है। इसके साथ ही ममता बनर्जी त्रिपुराए असमए गोवा में भी चुनाव लड़ने की बात कह रही है।

उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कांग्रेस के साथ सीटों का बंटवारा नहीं होने के चलत 31 सीटों पर अपने उम्मीदवारों के नामों की एकतरफा घोषणा कर दी थी। इनमें वह लोकसभा सीटें भी शामिल हैं जहां से कांग्रेस चुनाव लड़ने का दावा कर रही है। अखिलेश यादव की एकतरफा घोषणा से उनका कांग्रेस के साथ गठबंधन खटाई में पड़ता नजर आ रहा था। मगर कांग्रेस ने अखिलेश यादव की सभी शर्तें मान कर उत्तर प्रदेश में गठबंधन को टूटने से बचा लिया है। अखिलेश यादव ने कांग्रेस को 17 सीटें देने की बात कही है।

बिहार में राजदए कांग्रेसए वामपंथी दलों को मिलकर चुनाव लड़ना है। मगर वहां नीतीश कुमार की जदयू के गठबंधन से बाहर जाने के बाद लालू प्रसाद यादव की राजद 28 सीटों पर चुनाव लड़ने की बात कर रही है। जबकि कांग्रेस वहां 10 सीट पर चुनाव लड़ना चाहती है। वामपंथी दल भी वहां आठ सीटों पर दावा कर रहें है। ऐसे में यदि समय रहते बिहार में सीटों का बंटवारा नहीं हुआ तो गठबंधन की गांठ ढ़ीली पड़ जाएगी।

तमिलनाडु में कांग्रेस ने 2019 में द्रुमक के साथ मिलकर नो सीटों पर चुनाव लडकर आठ सीट जीती थी। मगर अब कांग्रेस वहां 16 सीटों पर चुनाव लड़ना चाहती है। जबकि द्रुमक कांग्रेस को 7 सीट ही देना चाहती है। तमिलनाडु में भी इंडिया गठबंधन में शामिल दलों में सीट बंटवारे को लेकर आपसी रार मची हुई है। आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस को दिल्ली में तीन सीट देने की बात कही है। वहीं पंजाब में सीटों के बंटवारे को लेकर अभी तक बात नही बनी है। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने तो पंजाब में आम आदमी पार्टी द्वारा अकेले ही चुनाव लड़ने की घोषणा भी कर दी गयी थी। आप ने कांग्रेस से हरियाणाए गुजरातए गोवाए असम की कुछ सीटों की भी मांग की हैं।

महाराष्ट्र में शिवसेना ;उद्धव बालासाहेब ठाकरेद्धए राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ;शरदचंद्र पवार द्ध व कांग्रेस की महाविकास अघाडी के साथ वंचित बहुजन अघाड़ी ;वीबीएद्ध के प्रकाश अंबेडकर के शामिल होने से महाविकास अघाड़ी मजबूत हुई है। मगर महाराष्ट्र में भी अभी सीटों का बंटवारा नहीं हो पाया है। हालांकि महाराष्ट्र में इंडिया गठबंधन में शामिल सभी दल एकजुटता के साथ चुनाव में उतरने को तैयार हैं। इंडिया गठबंधन में शामिल सभी दलों को एक साथ मिलकर चुनाव लड़ना होगा तभी वह भाजपा से मुकाबला कर पाएंगे। इसके लिए सबसे पहले इंडिया गठबंधन के संयोजक का चयन करना होगा।

गठबंधन मे सबसे अधिक सीटों पर चुनाव लड़ने वाली कांग्रेस पार्टी को चाहिए कि जहां क्षेत्रीय दल मजबूत है। वहां उनके लिये अधिक सीटे छोडें ताकि भाजपा को कड़ी टक्कर दे सके। वहीं कर्नाटकए गुजरातए आंध्र प्रदेशए तेलंगानाए उड़ीसाए राजस्थानए मध्य प्रदेशए छत्तीसगढ़ए हरियाणाए हिमाचल प्रदेशए उत्तराखंड जैसे प्रदेश जहां कांग्रेस मजबूत स्थिति में है वहां वह अधिक सीटों पर चुनाव लड़े।

वर्तमान समय में कांग्रेस पार्टी महाराष्ट्रए तमिलनाडुए केरलए पश्चिम बंगालए बिहारए उत्तर प्रदेशए दिल्लीए पंजाबए जम्मू कश्मीरए त्रिपुराए गोवा जैसे राज्यों में बहुत कमजोर स्थिति में पहुंच गई है। इन प्रदेशों में क्षेत्रीय दल बहुत मजबूत है। ऐसे में कांग्रेस को इन प्रदेशों में क्षेत्रीय दलों की मदद करनी चाहिए। ताकि इंडिया गठबंधन में शामिल सभी दल एक साथ मिलकर भाजपा नीत एनडीए से मुकाबला कर सके। कांग्रेस के नेता जब तक बड़ा मन रखकर सीट बंटवारे को अंतिम रूप नहीं देंगे तब तक गठबंधन में शामिल नेताओं में आपसी मनमुटाव जारी रहेगा। इसलिए इंडिया गठबंधन के नेताओं को सबसे पहले सीटों का बंटवारा कर मनमुटाव की स्थिति को समाप्त करना होगा। तभी इंडिया गठबंधन एकजुट से चुनावी मुकाबले में उतर पायेगा।

रमेश सर्राफधमोरा
(ये लेखक के अपने विचार है)

पश्चिम में न दम, न शर्म!

इजराइल जिद पर अड़ा हुआ है और बैंजामिन नेतन्याहू की बेरहमी कायम है। इजराइल की सेना के हाथों अब करीब 30,000 फिलिस्तीनी अपनी जान गंवा चुके हैं। समुद्र से घिरे गाजा इलाके में मरने वालों में से दो-तिहाई से अधिक महिलाएं और बच्चे हैं। हजारों अन्य मलबे में दफन हैं। इजराइल-हमास युद्ध शुरू होने के बाद से 88 पत्रकारों की मौत हो चुकी है। गाजा के कत्लेआम का सीधा प्रसारण टेलिविजनों और मोबाईलों पर हो रहा है बावजूद इसके दुनिया के सारे नेता बेबस हैं। पश्चिमी देश ङ्क जो अपने आप को वैश्विक मूल्यों के हिमायती बताते हैं और कायदे-कानून के मुताबिक शासन चलाने की वकालत करते हैं ङ्क गाजा युद्ध को रूकवाने में नाकाम रहे हैं। नेतन्याहू को रोक पाने में उनकी नाकामयाबी से साफ़ है कि पश्चिम और उसके नेताओं का दबदबा और ताकत घटती हुई है।

विदेशी मामलों और सुरक्षा नीति के यूरोपीय संघ के प्रतिनिधि जोसेफ बोरेल ने कुछ महीने पहले माना था कि गाजा का हाल का घटनाक्रम च्अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की नैतिक और राजनीतिक असफलता का नतीजा हैज्उन्होंने कहा था कि कई दशकों से करीब-करीब पूरी दुनिया दो देश बनाकर इस समस्या का हल निकलने की बात करती आ रही है। लेकिन सिर्फ बातें हुईं। समस्या को हल करने के लिए कोई कोशिश नहीं की गयी।

बोरेल और कई अन्यों के मुताबिक इस स्थिति के लिए अमेरिका काफी हद तक जिम्मेदार है। लम्बे समय तक अमरीका के राष्ट्रपतियों की नीति रही है च्नरमी से बात करो और हाथ में एक मोटा डंडा रखोज्इसके उलट, इस बार जो बाईडन ने बात सख्ती से की लेकिन उनके हाथों में डंडा नहीं था। अमेरिका एक अस्थायी युद्धविराम चाहता है जिसके दौरान इजराइली बंधकों की रिहाई हो और गाजा तक पर्याप्त सहायता सामग्री पहुँच जाए। लेकिन यह बाईडन प्रशासन की नाकाबिलियत या शायद कायरता है कि वह नेतन्याहू और उनके अति-दक्षिणपंथी सहयोगियों की रजामंदी में नाकाम है। पिछले हफ्ते बैंजामिन नेतन्याहू ने काहिरा में युद्धविराम और बंधकों की रिहाई के सम्बन्ध में समझौता वार्ताओं से अपने प्रतिनिधिमंडल को वापस बुलवा लिया। इससे देश में बंधकों के परिवारों में गुस्सा बढ़ा और और इजराइल के दोस्त देशों की चिंता बढ़ी। खबरों के मुताबिक नेतन्याहू अपने मंत्रिमंडल के अतिवादी सदस्यों की इस धमकी के आगे झुक गए है कि यदि उन्होंने उतावलेपन में हमास के साथ कोई समझौता किया तो उन्हें अपने पद से हाथ धोना पड़ेगा।

इजराइल के केबिनेट में बेजलेल सिमोट्रिक और इतमार बेन-गिविर साम्प्रदायिक उग्रपंथी हैं और ये कब्जे वाले पश्चिमी किनारे में बनी अवैध बस्तियों में रहते हैं। वे जो चाहे बोलते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि उनका कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। वे अपने मतदाताओं के बीच लोकप्रिय हैं।लगता है ये दोनों भी (पुतिन की तरह) डोनाल्ड ट्रंप के दुबारा सत्ता में आने का इंतजार कर रहे हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उनके लिए भी ट्रम्प शायद बेहतर राष्ट्रपति होंगे? या शायद वे ट्रंप की मदद से गाजा में दुबारा बसने की उम्मीद कर रहे हैं। उनके दिमाग में क्या चल रहा है, यह कोई नहीं जानता।

लेकिन एक बात पक्की है ङ्क इजराइल और पश्चिम को कत्लेआम का कोई नतीजा नहीं भुगतना पड़ रहा है। इजराइल की अंदरूनी राजनीति और अमेरिका व अन्य पश्चिमी देशों के ढीले-ढाले रवैये को देखते हुए ऐसा लगता है कि युद्ध विराम नहीं हो सकेगा। लड़ाई जारी रहेगी।

सवाल है क्या व्लादिमीर पुतिन, बेंजामिन नेतन्याहू और जो बाईडन में ज़रा सा भी फर्क है?

दरअसल पश्चिमी देशों में चारों तरफ पाखंड का बोलबाला है। पश्चिम इजराइल से कड़क कर बात नहीं कर रहा है। शर्मनाक है जो पश्चिम कह रहा हैं कि इजराइल जो कर रहा है, वह, दरअसल आत्मरक्षा है। यह भी कि हमास के 7 अक्टूबर के भयावह हमले का यह नतीजा होना ही था। कौन कहता है कि इजराइल को अपने नागरिकों की जान लेने वालों से बदला लेना का हक़ नहीं है? बिलकुल है। मगर लगातार, बिना रुके, निर्दोष नागरिकों, औरतों और बच्चों को मारते जाना भला कैसे सही ठहराया जा सकता है? इजराइल और उसके अत्याचारों पर चुप्पी साधे पश्चिम को देखकर शायद बड़े से बड़ा पाखंडी भी शर्मसार होगा।

श्रुति व्यास
(ये लेखक के अपने विचार है)

राज-काज

मराठा आरक्षण के बावजूद

मुद्दा यह है कि क्या आरक्षण से गरीबी या शैक्षिक पिछड़ेपन की समस्या दूर हो जाएगी? क्या ऐसा पहले से आरक्षण प्राप्त समुदायों में हो गया है? तमाम अध्ययन और अनुभव बताते हैं कि ऐसा नहीं हुआ है। महाराष्ट्र सरकार ने मराठा समुदाय को आरक्षण देने के लिए विधानसभा से विधेयक पारित करा लिया है। यह प्रावधान इस रूप में किया गया है, जिससे ओबीसी समुदाय नाराज ना हो। मराठा संगठन ओबीसी श्रेणी के अंदर आरक्षण मांग रहे थे, लेकिन राज्य सरकार ने उनके लिए अलग से आरक्षण का प्रावधान किया है। इस तरह ये आरक्षण 50 प्रतिशत की उस सीमा से बाहर होगा। यह सीमा सुप्रीम कोर्ट ने लगा रखी है। वैसे यह सीमा आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों के लिए दस प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान के साथ पहले ही टूट चुकी है।

प्रियंका राज्यसभा नहीं मिलने से नाराज

कांग्रेस के जानकार सूत्रों का कहना है कि प्रियंका गांधी वाड्रा नाराज हैं। वे राज्यसभा से अपनी पारी की शुरुआत करना चाहती थीं लेकिन उनको मौका नहीं मिला। पिछले कई बरसों से उनके करीबी नेता इसकी मांग कर रहे हैं। इस बार पक्के तौर पर कहा जा रहा था कि वे राज्यसभा में जाएंगी। उन्होंने खुद इसके लिए बहुत भागदौड़ की थी। पिछले दिनों वे शिमला में थीं तो वही से हैदराबाद गई थीं और मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी से मिल कर लौटी थीं। कहा जा रहा था कि वे हिमाचल प्रदेश या तेलंगाना से राज्यसभा में जा सकती हैं। जब यह तय हो गया कि सोनिया गांधी राजस्थान से राज्यसभा में जाएंगी तब उनकी उम्मीद और बढ़ गई थी कि वे हिमाचल से उच्च सदन में जा सकती हैं।

लेकिन उनका नाम नहीं तय हुआ और सोनिया गांधी ने रायबरेली के लोगों को एक भावुक चिट्ठी लिखी तो उसमें संकेत दे दिया कि परिवार का कोई सदस्य चुनाव लड़ सकता है। बताया जा रहा है कि इस बात से प्रियंका नाराज हैं। वे अमेठी में पिछले चुनाव में राहुल गांधी का हस्र देख चुकी हैं। इसलिए उनको पता है कि वे रायबरेली लड़ेंगी तो भाजपा की पूरी मशीनरी उनको हरवाने में जुट जाएगी। इसलिए वे लड़ना नहीं चाहती हैं। इसके अलावा वे बिना किसी प्रभार के महासचिव बना कर रखे जाने से भी नाराज हैं। तभी कहा जा रहा है कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा के 35 दिन से ज्यादा हो जाने के बावजूद वे उसमें शामिल नहीं हुई। उत्तर प्रदेश में जब राहुल की यात्रा पहुंची तो बताया गया कि प्रियंका बीमार हैं और इसलिए यात्रा में नहीं शामिल होंगी।

सुडोकू पहेली — क्रमांक- 5292

5			6		7			
	4		3		9	8		
3	7							1
4							3	
6	3		1	2	5		9	4
	1							8
8							7	6
		7	2		6		1	
			5		3			9

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5291

2	8	9	4	7	5	1	3	6
5	7	6	1	8	3	4	2	9
3	1	4	2	9	6	8	5	7
7	6	2	5	1	8	3	9	4
4	5	1	9	3	2	6	7	8
9	3	8	6	4	7	2	1	5
6	9	7	8	2	1	5	4	3
8	2	3	7	5	4	9	6	1
1	4	5	3	6	9	7	8	2

वर्ग पहेली 5292

संकेत: बाएं से दाएं
1. यह थाईलैंड में रामायण का थाईवर्जन महाग्रंथ है (4)
5. इटली का एक प्रमुख ज्वालामुखी है जिसकी भौगोलिक स्थिति सिसली द्वीप है जो कैटेनिया प्रांत में स्थित है (3)
8. उदाहरण के तौर पर (4)
9. अभिव्यक्त करना, कथन वचन (3)
10. बाधा, रूकावट, अड़चन (3)
11. ऐसा काव्य जिसमें रस, अलंकार, नायिका भेद आदि तत्वों को ध्यान में रखकर लिखा गया हो (4)
15. वह प्राणी जो पुरुष जाति का हो (2)
16. भेड़ (2)
17. किरण कुमार, विद्या सिन्हा, प्रेमनाथ आदि की भूमिकाओं वाली एक असफल फिल्म (4)
19. अविद्या, धाति, ममता (2)
21. ईशदूत, पैगंबर, रसूल (2)
22. पलक, दृंगचल, आँख का परदा (5)

ऊपर से नीचे
1. राम केचरित्र अभिनय हेतु होने वाला समारोह (4)
2. तीस दिन का समय, माह, महीना (2)
3. हर्षध्वनि, नीख, किलकार (4)
4. महिला ईसाई पादरी को यह कहा जाता है (2)
5. एक निषाद का नाम जिसने गुरू द्रोणाचार्य की मूर्ति को गुरू मानकर उसके सामने शस्त्राभ्यास किया था (4)
6. सेवा-सुश्रूषा, तीमारदारी, खिदमत (3)
7. विविध, अनेक प्रकार के (2)
10. ख वर्ग (3)
12. तृण, सूखी घास आदि का छोटा टुकड़ा (3)
13. क्रोध, गुस्सा (2)
14. मुस्लिम धर्म के मानने वाला का उपन्यास (2)
16. परिश्रम, शारीरिक श्रम (3)
17. राजा के लिए प्रयुक्त शब्द (3)
18. जंगल, अरण्य, वन (3)
20. यवनिका, अधोमुख (2)

वर्ग पहेली 5291 का हल

उ	त्त	र	प्र	दे	श		क
मा		म	ति		प	ह	ला
भा	ज	क		सा	थ		की
र	ग		रा	म	ग्र		र
ती	त	र			ह	नु	
		ह		प्रा	ण		प
आ	वा	म		वी		सी	नी
र्थ		त	प	न		च	र